अंक 277 वर्ष 57

भाषा

मार्च–अप्रैल 2018

भारतीय आत्मकथा साहित्य विशेषांक

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

सत्यमेव जयते

Skill India

केंद्रीय हिंदी निदेशालय
भारत सरकार

ISSN 0523-1418
भाषा (द्वैमासिक)
वर्ष : 57 ☐ अंक : 4 (277)
मार्च–अप्रैल 2018

संपादकीय कार्यालय
केंद्रीय हिंदी निदेशालय,
उच्चतर शिक्षा विभाग,
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार,
पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110066
वेबसाइट : www.hindinideshalaya.nic.in
ईमेल : bhashaunit@gmail.com

बिक्री केंद्र :

नियंत्रक, प्रकाशन विभाग, सिविल लाइंस, दिल्ली - 110054
सदस्यता हेतु ड्राफ्ट नियंत्रक, प्रकाशन विभाग, दिल्ली के पक्ष में भेजें।

मूल्य :

1.	एक प्रति का मूल्य	=	रु. 25.00	(डाक खर्च सहित)
2.	वार्षिक सदस्यता शुल्क	=	रु. 125.00	
3.	पंचवर्षीय सदस्यता शुल्क	=	रु. 625.00	
4.	दस वर्षीय सदस्यता शुल्क	=	रु. 1250.00	
5.	बीस वर्षीय सदस्यता शुल्क	=	रु. 2500.00	

वेबसाइट : www.deptpub.gov.in
ई–मेल : pub.dep@nic.in
दूरभाष : 011-23817823/ 9689
फैक्स : 011-23817846

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे भारत सरकार या संपादन मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

निदेशक की कलम से
संपादकीय
आपने लिखा

आलेख

1.	संस्कृत भाषा में आत्मकथा साहित्य	डॉ. अजय कुमार मिश्र	13
2.	हिंदी आत्मकथा का विकास-क्रम	प्रो. सुशील कुमार शर्मा	31
3.	हिंदी साहित्य में स्त्री आत्मकथा	डॉ. वंदना भारती	35
4.	हिंदी की दलित आत्मकथा	डॉ. आलोकरंजन पांडेय	46
5.	हिंदी का समकालीन आत्मकथा साहित्य	डॉ. अनुपम माथुर	57
6.	असमिया आत्मकथा का अतीत	डॉ. अनुशब्द	68
7.	स्वानुभूत सत्य को उजागर करने वाली बंगला महिला आत्मकथाएँ	प्रो. अरुण होता	78
8.	कन्नड का आत्मकथा साहित्य और आलूर वेंकटराव की आत्मकथा "नन्न जीवन स्मृतिगळु"	प्रो. सुनीता मंजनबैल	88
9.	कश्मीरी और डोगरी भाषाओं में आत्मकथा साहित्य	डॉ. महाराज कृष्ण भरत मूसा	95
10.	खासी साहित्य में आत्मकथा: एक अध्ययन	प्रो. स्ट्रीम्लेट ड्खार हिंदी अनुवाद : डॉ. जीन एस. ड्खार	107
11.	हिंदी और तमिल की नारी आत्मकथाकार	प्रो. निर्मला एस. मौर्य	117
12.	तेलुगु में आत्मकथा साहित्य	डॉ. जे. एल. रेड्डी	126

असमिया आत्मकथा का अतीत

डॉ. अनुशब्द

उन्नीसवीं सदी के असमिया साहित्य, भाषा और संस्कृति के विकास में अमरीकी मिशनरियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन मिशनरियों ने अपनी गैर धार्मिक पुस्तकों और लेखकों के माध्यम से एक धर्मनिरपेक्ष और वैज्ञानिक दृष्टिकोण फैला दिया। असम के लोग उन उदार अमरीकी मिशनरियों के बहुत ऋणी हैं जिनके निष्ठापूर्ण परिश्रम और बलिदान की वजह से आधुनिक असमिया साहित्य को अपना आकार मिला। इस संबंध में, तीन महान अमरीकी विद्वानों का उल्लेख किया जा सकता है। वे हैं श्रद्धेय ओलिवर टी. कटर, नाथन ब्राउन और माइल्स ब्रनसन। यह कहा जा सकता है कि हमारे आधुनिक भाषा, साहित्य, शिक्षा और संस्कृति का जन्म असमिया पत्रिका व अखबार 'अरुणोदय' के प्रकाशन के साथ सन् 1846 में पहली बार हुआ, जो अमरीकी मिशनरियों का हस्तशिल्प था।

इस पत्र में मौजूद दुनिया के समाचार व विचार, आधुनिक विज्ञान और साहित्य की जानकारी ने लोगों के मन में आशा और आकांक्षा का एक नया क्षितिज खोल दिया। इसने व्यापक रूप में लोगों के मानसिक दृष्टिकोण को सुधारा और तब लोगों ने भौतिकवादी और मानवतावादी घटनाओं की दुनिया में मूल्य को देखा।

एक नए युग की इस भोर में लोगों ने इंसान को इंसान की तरह पहचाना और इस ज्ञान तथा समझ ने उनको समय के साथ अपने विचारों और भावनाओं के बोझ से आत्मकथात्मक लेखन के माध्यम से मुक्त होना सिखा दिया। 'अरुणोदय' पत्रिका के मूल लेखकों के रूप में हम तीन प्रख्यात असमिया

भाषा ISSN 0523-1418

अनुशब्द